(ज) (ii)

**अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

(क) धनराज पिल्लै किस खेल से संबंधित थे।
उत्तर-
धनराज पिल्लै हॉकी खेल से संबंधित थे।

(ख) धनराज ने अपनी जूनियर राष्ट्रीय हॉकी कब खेली? उस समय उनका शरीर कैसा था?
उत्तर-
धनराज ने अपनी जूनियर राष्ट्रीय हॉकी की 1985 में मणिपुर में खेली। उस समय उनका शरीर बहुत दुबला-पतला था और चेहरा छोटे बच्चे जैसा था।

(ग) धनराज ने कृत्रिम घास पर सबसे पहले हॉकी कब खेली?
उत्तर-
1988 में जब वे राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने दिल्ली आए।

(घ) धनराज की पहली कार कौन-सी थी?
उत्तर-
धनराज की पहली कार एक सेकेंड हैंड महेंद्रा अरमाडा थी।

(ङ) साक्षात्कार का क्या अर्थ है?
उत्तर-
साक्षात्कार का अर्थ है किसी से मिलकर आमने-सामने की बातचीत करना।

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

(क) धनराज का बचपन कैसा था?
उत्तर-
धनराज का बचपन काफ़ी गरीबी में व्यतीत हुआ था। उनको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा था। उनका एवं उनके भाइयों के पालन-पोषण में उनकी माँ को काफ़ी संघर्ष करना पड़ा था। धनराज को हॉकी खेलने के लिए हॉकी स्टिक खरीदने के पैसे नहीं होते थे। वे पढ़ाई में भी फिसड्डी थे।

(ख) धनराज को किस बात की मायूसी हुई? यह कैसे खत्म हुई ?
उत्तर-
धनराज का विश्वास था कि उन्हें 1988 के ओलंपिक कैंप का बुलावा जरूर आएगा, पर 57 खिलाड़ियों की सूची में उनका नाम नहीं था। इससे उन्हें मायूसी हुई । यह मायूसी अगले साल ऑलविन एशिया कप के कैंप के चुनाव पर दूर हुई।

(ग) धनराज के व्यक्तित्व की क्या विशेषता है?
उत्तर-
उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि वे भावुक हैं और दूसरों की तकलीफ़ को नहीं देख सकते। वे अपने मित्रों और परिवारजनों का बहुत सम्मान करते हैं। वे गलती होने पर माफ़ी भी माँग लेते हैं।

(घ) धनराज किसे पहली ज़िम्मेदारी मानते थे?
उत्तर-
धनराज अपनी पहली ज़िम्मेदारी मानते थे, अपने परिवार की आर्थिक तंगी को दूर करना। वे परिवार को बेहतर जिंदगी देना चाहते थे।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

(क) धनराज का हॉकी खेलने का सफ़र कैसे चला?
उत्तर-
धनराज का बचपन काफ़ी आर्थिक संघर्षों के बीच गुजरा। उनके पास बचपन में तो हॉकी खरीदने के भी पैसे न थे। जब उनके मित्र खेल चुके होते थे, तो वे उनसे हॉकी स्टिक माँगकर खेलने का अभ्यास करते थे। जब उनके बड़े भाई को भारतीय कैंप के लिए चुना गया तो उन्होंने इन्हें अपनी हॉकी स्टिक दी जो इनकी अपनी थी। उसी से अभ्यास करके पहली बार 16 वर्ष की आयु में सन् 1985 में इन्हें जूनियर राष्ट्रीय हॉकी, खेलने का अवसर मणिपुर में प्राप्त हुआ। सन् 1986 में इन्हें सीनियर टीम में शामिल कर लिया गया। इसी वर्ष ऑलविन एशिया कप के कैंप में भी इन्हें चुना गया। इसके बाद वे निरंतर सफलता की सीढ़ियाँ ही चढ़ते रहे और लोगों के प्रिय ‘हॉकी खिलाड़ी बन गए।

**मूल्यपरक प्रश्न**

1. धनराज पिल्लै के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?
उत्तर-
धनराज पिल्लै के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि यदि हमारे मन में आगे बढ़ने की चाहत हो, मेहनत और लगन हो, निश्चिय हो, तो आर्थिक और पारिवारिक स्थितियाँ कभी भी आड़े नहीं आतीं। मनुष्य सदैव सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते रहता है। जैसे धनराज पिल्लै साधारण परिवार से संबंध रखते थे। हॉकी का अभ्यास करने के लिए कई बार उनके पास हॉकी स्टिक भी नहीं होती थी लेकिन उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें हॉकी का महान खिलाड़ी बना दिया।

#### **Question 1:**

**साक्षात्कार पढ़कर आपके मन में धनराज पिल्लै की कैसी छवि उभरती है? वर्णन कीजिए।**

#### **Answer:**

**जैसे कि साक्षात्कार में उल्लेख किया गया है, धनराज पिल्लै दुबली कद-काठी के हैं। वे बहुत जुझारू स्वभाव के हैं व अपने आपको बहुत असुरक्षित महसूस करते हैं। बचपन का समय संघर्षपूर्ण होने के कारण वे तुनुकमिज़ाजी हैं। इन्हें गुस्सा अधिक आता है। वे अपने घर परिवार की बहुत इज्ज़त करते हैं। पहले वे अपनी पढ़ाई-लिखाई को लेकर खुद को हीन समझते थे, लेकिन बाद में हॉकी से मिली प्रसिद्धि के बाद उन्हें खुद पर गर्व है।**

#### **Question 2:**

**धनराज पिल्लै ने ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने तक की यात्रा तय की है। लगभग सौ शब्दों में इस सफ़र का वर्णन कीजिए।**

#### **Answer:**

**धनराज पिल्लै का ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने की यात्रा अत्यंत संघर्षपूर्ण रही। इनका बचपन मुश्किलों से भरा था। गरीब परिवार से होने के कारण इनके पास अपनी हॉकी स्टिक तक नहीं थी। हॉकी खेलने के लिए इन्हें अपने साथियों से उधार पर हॉकी स्टिक माँगनी पड़ती थी, और वो भी उन्हें तब मिलती थी जब उनके साथी खेल चुके होते थे। इन्हें अपने जीवन की पहली हॉकी स्टिक तब मिली जब इनके बड़े भाई का भारतीय कैंप के लिए चयन हुआ। तब इनके भाई ने अपनी पुरानी हॉकी स्टिक इन्हे दी। मात्र 16 साल की उम्र में इन्होनें जूनियर राष्ट्रीय हॉकी सन् 1985 में मणिपुर में खेली। 1986 में इन्हें सीनियर टीम में डाल दिया गया । इन्होनें सबसे पहले कृत्रिम घास तब देखी जब ये 1988 में नेशनल्स में भाग लेने दिल्ली आए। इनकी पहली गाड़ी एक सेकेंड हैंड अरमाडा थी। काफ़ी नामी खिलाड़ी बनने के बाद भी इन्हें लोकल ट्रेनों तथा बसों में सफ़र करना पड़ता था। 1999 में महाराष्ट्र सरकार ने इन्हें पवई में एक फ़्लैट दिया और सन् 2000 में इन्होनें अपनी फ़ोर्ड आईकॉन खरीदी।**

#### **Question 3:**

**‘मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है’-धनराज पिल्लै की इस बात का क्या अर्थ है?**

#### **Answer:**

**सफलता से लोग प्राय: घंमड में अंधे हो जाते हैं। इसलिए धनराज पिल्लै की माँ ने उन्हें विनम्र रहने की सीख दी है। बड़ी-से-बड़ी कठिनाईयों को विन्रमता से हल किया जा सकता है। आदमी कितना भी बड़ा हो जाए, घमंड नहीं करना चाहिए। बल्कि, विनम्र ही रहना चाहिए जैसे फल से लदा एक पेड़ झुका रहता है।**

#### **Question 1:**

**ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। क्यों? पता लगाइए।**

#### **Answer:**

**ध्यानचंद हॉकी के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी थे। वे हॉकी स्टिक और बॉल के साथ इस तरह खेलते थे मानो कोई करिश्मा है। इसलिए इन्हें हॉकी का जादूगर कहा जाता है।**